पुण्य-पाप के प्रकार एवं उनके परिणाम

भूमिका

जीवन कर्ममय है । कर्मफल अटल है । अच्छे कर्मका फल पुण्य है तथा उससे सुख प्राप्त होता है, जबकि दुष्कर्म कर्मका फल पाप है एवं उससे दुःख प्राप्त होता है । हम देखते हैं कि अनेक बार 'सदाचरणी होकर भी सज्जन जीवनमें दुःख भोगते हैं, जबकि गुंडे, भ्रष्टाचारी इत्यादि दुर्जन अनेक दुष्कृत्य करनेके उपरांत भी ऐश्वर्यादि सुखका उपभोग करते हैं ।' तब 'दुर्जनोंको उनके पापोंका फल क्यों नहीं मिलता ?', यह प्रश्न किसीके भी मनमें उत्पन्न हो सकता है । पूर्वजन्मोंके पुण्य-संचयके कारण दुर्जनोंको सुख प्राप्त होता है; परंतु पुण्यका भंडार समाप्त होनेपर उनके पापकर्मोंका फल, अर्थात् रोग, दरिद्रतादि दुःख एवं मृत्युके उपरांत नरकवासादि दुःख उन्हें भोगने ही पडते हैं; इससे कोई छूट नहीं सकता । अतएव पापोंका परिमार्जन करना अत्यावश्यक है । दैनिक व्यवहारमें मनुष्यसे अनजानेमें पापकर्म निरंतर होते ही रहते हैं उदा. झाडूसे घर बुहारते समय कीडे-मकोडोंकी हत्या होना, अन्योंसे द्वेष करना इत्यादि । संक्षेपमें, मनुष्यके लिए पापसे बचना असंभव है । स्वयंद्वारा किए गए पापोंका पश्चाताप कर उन पापोंका परिमार्जन करनेके लिए धर्मद्वारा बताए गए दंड स्वीकारना, 'प्रायश्चित' कहलाता है ।

प्रस्तुत ग्रंथमें पाप लगने तथा न लगनेके विविध कारण, प्रायश्चित कर्मके साथ ही पुण्य बढानेका महत्त्व एवं पुण्य निर्माण करनेवाले कर्मोंके विषयमें सुबोध मार्गदर्शन किया गया है । पाप-पुण्यात्मक कर्मोंके कारण निर्मित सुख-दुःखोंके बंधनोंसे परे जाकर निरंतर सच्चिदानंद अवस्थामें रहनेके लिए ऐसे कर्म करने पडते हैं, जिससे कर्मफल प्राप्त न हो । कर्मके परिणामसे बचनेके लिए क्या करना चाहिए, इसकी भी चर्चा इस ग्रंथमें की गई है ।

यह ग्रंथ पढकर पाठकोंको पाप-पुण्यकी ओर देखनेकी एक नई दृष्टि प्राप्त हो तथा पाप-पुण्यके परे जाकर आनंदप्राप्तिके लिए सदैव साधना करनेकी प्रेरणा प्राप्त हो, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! **- संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

१. कर्मके परिणाम **१२**

१ अ. सुख एवं दुःख १ आ. संस्कार १२

१ इ. पाप-पुण्य १ ई. विवरण एवं अनुभवजन्य ज्ञान १३

१ उ. अहंभाव अथवा हीन भावना १३

२. पुण्य **१३**

२ अ. व्याख्या २ आ. पुण्य मिलनेके कारण १३

२ इ. पूर्वपुण्यके कारण प्राप्त होनेवाली बातें १६

२ ई. अपराधीका पुण्य बलवान रहनेतक उसे दंड न मिलना १७

२ उ. पुण्य न मिलना २ ऊ. पुण्यके प्रकार - शुद्ध एवं अशुद्ध १७

२ ए. खरा पुण्यवान २ ऐ. पुण्यका परिणाम १८

२ ओ. पुण्यकी मात्राके अनुसार प्राप्त होनेवाले स्वर्गके प्रकार १९

२ औ. पुण्य जला देनेवाली बातें २ अं. पुण्य समाप्त होनेके लक्षण १९

२ क. साधना कर पुण्य बढानेका महत्त्व २०

२ ख. नामजपका पुण्य अन्योंको अर्पित कर पाना २३

२ ग. पुण्यका फल ईश्वरको अर्पण करनेके लाभ २३

२ घ. पुण्यकर्म गुप्त रखें २३

३. पाप **२४**

३ अ. व्याख्या - कर्मयोगानुसार, भक्तियोगानुसार, ज्ञानयोगानुसार २४

३ आ. मनुष्यद्वारा पाप होना २४

३ इ. व्यवहारमें पापसे बचना असंभव ३ ई. पापके साक्षि २४

३ उ. पापके कारण २५

३ ऊ. पापके प्रकार ३ ए. पापका फल (कर्मविपाक) ३२

३ ऐ. पापकी तीव्रतानुसार मृत्यु पश्चातके भोग तथा मिलनेवाला जन्म ४८

३ ओ. अन्योंपर पापका परिणाम ६४